अध्याय 6

नवीन धार्मिक विचारों का उदय

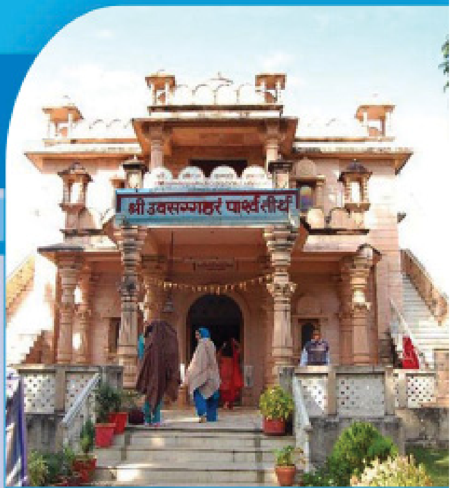

नगपुरा उवसग्गहरं पार्श्वनाथ तीर्थ

पिछले पाठ में हमने महाजनपद काल में राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्रों में हुए परिवर्तनों को जाना। इस पाठ में हम उसी समय धार्मिक मामलों में आए परिवर्तनों को जानने की कोशिश करेंगे।

आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व समाज में और उस वक्त प्रचलित वैदिक धर्म में कई तरह की बुराइयाँ आ गई थी। वैदिक धर्म काफी खर्चीला हो गया था। यज्ञ, जिनका कि वैदिक धर्म में महत्वपूर्ण स्थान था, कर्मकांडों तथा पशुबली के कारण आम जनता की पहुँच से दूर हो गए थे।

समाज के विभिन्न वर्णों में भेदभाव के कारण संघर्ष दिखाई देने लगा था। आम जनता शक्तिशाली राजाओं के आपसी युद्धों से परेशान थी। इसके अलावा राजकीय कर्मचारी भी जनता का शोषण कर रहे थे। ऐसे वातावरण में सुधारवादी विचारों की शुरुआत हुई और जनता ने उनका खुशी से स्वागत किया।

सबसे पहले वैदिक धर्म में ही कर्मकांडों से अलग ऐसे मुद्दों पर विचार शुरु हुआ जिनसे आम आदमी रोजाना जूझता था। जैसे मनुष्य मरने के बाद कहाँ जाता है? आत्मा क्या होती है? मोक्ष किस प्रकार प्राप्त हो सकता है? आदि। इन मुद्दों पर इस समय जो विचार उभरे वे पहले के विचारों से काफी सरल थे। इन नए विचारों का संकलन उपनिषदों में किया गया है।

इसी समय वैदिक परंपरा से अलग आडंबर विरोधी कई नए धर्मों की भी शुरुआत हुई। इनमें जैन और बौद्ध धर्म प्रमुख थे। आइये, हम इन दोनों धर्मों के बारे में थोड़ा विस्तार से जानें।

चित्र–6.1 स्वामी महावीर

स्वामी महावीर एवं जैन धर्म की शिक्षाएँ

HZJQCP

जैन धर्म के महापुरूषों को तीर्थंकर कहा जाता है। स्वामी महावीर 24वें तीर्थंकर थे। उन्होंने जैन धर्म को नया स्वरूप प्रदान किया।

स्वामी महावीर का जन्म 540 ई.पू. में वैशाली के निकट हुआ था। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ तथा माता का नाम त्रिशला देवी था।

इनके बचपन का नाम वर्धमान था। तीस वर्ष की उम्र में वर्धमान ने अपने बड़े भाई की आज्ञा प्राप्त कर सन्यास धारण किया। 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद उन्हें ''कैवल्य'' अर्थात् सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हुई। कठोर तपस्या और सहनशीलता के कारण उन्हें ''महावीर'' कहा गया एवं इंद्रियों के विजेता होने के कारण उन्हें ''जिन'' भी कहा गया। 72 वर्ष की आयु में पावापुरी नामक स्थान में इनका निर्वाण हुआ।

चित्र–6.2 महात्मा गौतम बुद्ध

जैन धर्म की शिक्षाएँ

जैन धर्म के अनुसार मनुष्य को अपने जीवन में त्रिरत्न (यानी तीन रत्नों) को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। ये त्रिरत्न पंचमहाव्रत (यानी पाँच व्रतों) के पालन करने से ही प्राप्त हो सकता है। इनका पालन करने से मनुष्य को ज्ञान तथा निर्वाण (जन्म एवं मृत्यु से मुक्ति) की भी प्राप्ति होती है। इन त्रिरत्नों में पहला था सत्य और असत्य का ज्ञान होना (सम्यक–ज्ञान)। दूसरा, सच्चा ज्ञान (सम्यक–दर्शन) और तीसरा था अच्छा कार्य करना और गलत कार्य त्यागना (सम्यक–चरित्र) इन त्रिरत्नों को प्राप्त करने के लिए जिन पाँच महाव्रतों को पालन करना जरुरी था वे थे – सदा सत्य बोलना (सत्य),मन वचन एवं कर्म से हिंसा न करना (अहिंसा), चोरी न करना (अस्तेय), धन का संग्रह न करना (अपरिग्रह), अपने इंद्रियों को वश में रखना (ब्रह्मचर्य)। महावीर स्वामी ने अहिंसा पर विशेष जोर दिया था। उन्होंने बुरे या कठोर वचन बोलने को भी हिंसा माना था। उन्होंने सभी मनुष्यों को समान बताया । जैन धर्म के सिद्धांतों को ''आगम'' ग्रंथों में संग्रह किया गया है। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर बहुत से लोगों ने जैन धर्म को अपनाया और भारत में दूर–दूर तक इस धर्म का प्रचार हुआ। इस धर्म को व्यापारी एवं शासक वर्ग ने विशेष आश्रय प्रदान किया। हमारे छत्तीसगढ़ में भी इस धर्म का प्रभाव प्राचीन काल से ही है। यहाँ रायपुर जिले के आरंग में एक प्राचीन जैन मंदिर है। दुर्ग जिले के नगपुरा नामक गांव में 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी का प्राचीन मंदिर है। इसे उवसंग्हर पार्श्वनाथ तीर्थ कहा जाता है। पूरे भारत से यहाँ श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं।

महात्मा गौतम बुद्ध एवं बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म की स्थापना महात्मा गौतम बुद्ध ने की थी। गौतम बुद्ध स्वामी महावीर के समय के ही थे। महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. में कपिलवस्तु के पास लुम्बिनी नामक स्थान में हुआ था। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। गौतम बुद्ध के पिता का नाम शुद्धोधन तथा माता का नाम मायादेवी था।

कहा जाता है कि एक दिन सिद्धार्थ महल से बाहर निकले तो उन्होंने सबसे पहले एक अत्यंत बीमार व्यक्ति को देखा। थोड़ा आगे जाने पर उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति को देखा तथा अन्त में एक मृत व्यक्ति को देखा। इन दृश्यों से उनके मन में प्रश्न उठा कि क्या मैं भी बीमार पडूंगा, बूढ़ा हो जाऊँगा और मर जाऊँगा। इन प्रश्नों ने उन्हें काफी परेशान कर दिया था। तभी उन्होंने एक परिब्राजक (सन्यासी) को देखा। इससे 29 वर्ष की आयु में उन्होंने घर छोड़ दिया और सन्यास ग्रहण कर लिया। सिद्धार्थ ने ज्ञान की खोज में छः वर्षों तक कठोर तपस्या की। आपने एक पीपल के पेड़ के नीचे कठोर तपस्या की जहां पर उन्हें सत्य का ज्ञान हुआ, जिसे ''संबोधि'' कहा गया। उस पीपल के पेड़ को तभी से बोधि–वृक्ष कहा जाता है। महात्मा गौतम बुद्ध को जिस स्थान पर बोध या ज्ञान प्राप्त हुआ वह स्थान बोधगया कहा जाता है।

महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया था। 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर में उन्हें निर्वाण प्राप्त हुआ।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ

बौद्ध धर्म के अनुसार चार प्रमुख सच्चाइयों (चार आर्य सत्य) को हमेशा याद रखना चाहिए। ये सच्चाइयाँ ही बौद्ध धर्म के मूल आधार हैं।

ये हैं – संसार में दुख है (दुख का सत्य), दुख का प्रमुख कारण तृष्णा (तीव्र इच्छा) है। तृष्णा को त्यागकर दुख से छुटकारा पाया जा सकता है। सही आचरण एवं सभी बातों में मध्यम मार्ग अपनाकर दुख पर विजय (निर्वाण) पाया जा सकता है। इनके आधार पर यह लगता है कि बुद्ध ने अपने अनुयायियों को बीच का रास्ता अपनाने को कहा है अर्थात् न अधिक तप और न ही अधिक भोग–विलास करना

चाहिए। बौद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। बौद्ध धर्म ने जात–पाँत, ऊँच–नीच के भेदभाव तथा धार्मिक जटिलता को गलत बताया है। बुद्ध ने ईश्वर और आत्मा दोनों को नहीं माना। बुद्ध ने अपने शिष्यों को यह भी कहा कि उन्होंने किसी नए धर्म की स्थापना नहीं की है। यह धर्म हमेशा से चला आ रहा धर्म ही है। बुद्ध ने अपने विचार लोगों को उनकी ही भाषा (प्राकृत) में समझाया। उन्होंने बौद्ध संघों की भी स्थापना की जिसमें सभी जातियों के पुरुषों और महिलाओं को प्रवेश दिया। बौद्ध धर्म अपनी सादगी एवं सरलता के कारण भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी काफी लोकप्रिय हुआ। चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, श्रीलंका आदि देशों में आज भी इस धर्म के अनुयायी हैं। बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को तीन ग्रन्थों में एकत्र किया गया है जिन्हें ''त्रिपिटक'' कहते हैं। हमारा छत्तीसगढ़ भी किसी समय बौद्ध धर्म का एक बड़ा केन्द्र था। सातवीं शताब्दी में आए चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा विवरण में यह लिखा है कि दक्षिण कोसल की राजधानी सिरपुर बौद्ध शिक्षा का केन्द्र था। यहाँ सैंकड़ों विहार थे तथा यहाँ लगभग दस हजार बौद्ध भिक्षुक निवास करते थे। सिरपुर में की गई खुदाई से प्राप्त अनेक सुंदर बौद्ध मूर्तियों एवं मंदिरों के आधार पर भी यह कहा जा सकता है कि यहाँ बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र था।

चित्र–6.3 सिरपुर के बौद्धकालीन मूर्तियाँ

बच्चों, आपने जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध के संबंध में पढ़ा। इन दोनों के अतिरिक्त इस समय कई और धार्मिक विचारक भी हुए थे। सभी ने अहिंसा, प्रेम और करूणा की शिक्षा दी तथा समाज में ऊँच–नीच के भेदभाव को गलत बताया। इससे हम समझ सकते हैं कि सभी धर्म मूलतः हमें बुराई से बचाते हैं और अच्छाई की शिक्षा देते हैं। इसलिए हमें सभी धर्मों के प्रति आदर एवं सम्मान की भावना रखनी चाहिए।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) खाली स्थान को भरिए–

1 महावीर स्वामी का जन्म ––––– ई.पू. में हुआ था।

2 महात्मा बुद्ध का जन्म ––––– नामक स्थान में हुआ था।

3 महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश ––––– में दिया था।

4 महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को ––––– नामक ग्रंथों में संकलित किया गया हैं।

5 सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, और सम्यक चरित्र को जैन धर्म में ––––– कहते हैं।

(ब) प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. स्वामी महावीर का जीवन परिचय लिखिए।
2. जैन धर्म की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।
3. महात्मा गौतम बुद्ध का जीवन परिचय लिखिए।
4. बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

HZTLEC

(स) संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

1 त्रिरत्न   2 चार आर्य सत्य   3 पंचमहाव्रत   4 आष्टांगिक मार्ग

(द) योग्यता विस्तार–

छत्तीसगढ़ के प्राचीन जैन मंदिर एवं बौद्धमठ के चित्र एकत्रित कीजिए।